बैंक एवं वित्तीय सेवाएँ

अध्याय 8

बैंकर केवल एक मध्यस्थ ही नहीं होता है; अपितु वह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सेवा का सृजनकर्ता भी होता है, जो उद्यमियों को ऋण के माध्यम से विचारों को यथार्थ में रूपांतरित करने में सक्षम बनाता है।

– जोसेफ शुंपीटर, अर्थशास्त्री

महत्त्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *वित्तीय अवसंरचना क्या है और इसमें किन-किन घटकों का समावेश होता है?*
2. *बैंकों के प्रमुख कार्य कौन-कौन से हैं और वे लोगों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?*
3. *वित्तीय अवसंरचना राष्ट्र की प्रगति में किस प्रकार योगदान देती है?*

0784CH08

not to be republished © NCERT

चित्र 8.1

पिछले अध्याय में हमने भारत की भौतिक अवसंरचनाओं, जैसे— सड़कों, रेलमार्गों और दूरसंचार के विषय में अध्ययन किया। भौतिक अवसंरचना धन से संबंधित लेन-देन पर आधारित आर्थिक गतिविधियों में सहायक होती है। क्या आपको स्मरण है कि धन का प्रवाह विक्रेताओं से श्रमिकों तक वेतन के रूप में होता है और वही धन भविष्य में आवश्यक वस्तुओं के क्रय पर व्यय किया जाता है (इस पाठ्यपुस्तक के भाग 1 का अध्याय 'वस्तु विनिमय से मुद्रा तक')। व्यक्तियों के मध्य यह मौद्रिक लेन-देन किस प्रकार संपन्न होता है? साथ ही इतनी व्यापक भौतिक अवसंरचना के विकास और रख-रखाव के लिए धन की व्यवस्था कैसे की जाती है?

बैंक
एक वित्तीय संस्था, जो लोगों से जमा के रूप में धन एकत्र करती है तथा उस धन को ऋण के रूप में लोगों अथवा ऋणग्राहियों को प्रदान करती है।

यह सब वित्तीय अवसंरचना के माध्यम से संभव होता है, अर्थात बैंकों, भुगतान-प्रणालियों, शेयर बाजारों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों का सुव्यवस्थित जाल (नेटवर्क), जो व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकार को वित्तीय लेन-देन को सुगम बनाने तथा धन के प्रभावी प्रबंधन में सहायता करता है। आइए, इनके विषय में और अधिक सूचना प्राप्त करें।

आइए पता लगाएँ

चित्र 8.2 — बैंक

यह चित्र एक बैंक का है। आपके अनुसार ये लोग यहाँ क्या कर रहे हैं? अपने परिवार के सदस्यों से पूछिए कि क्या वे कभी बैंक गए हैं तथा बैंक में होने वाली गतिविधियों के विषय में उनसे और अधिक सूचनाएँ एकत्रित कीजिए।

not to be republished © NCERT

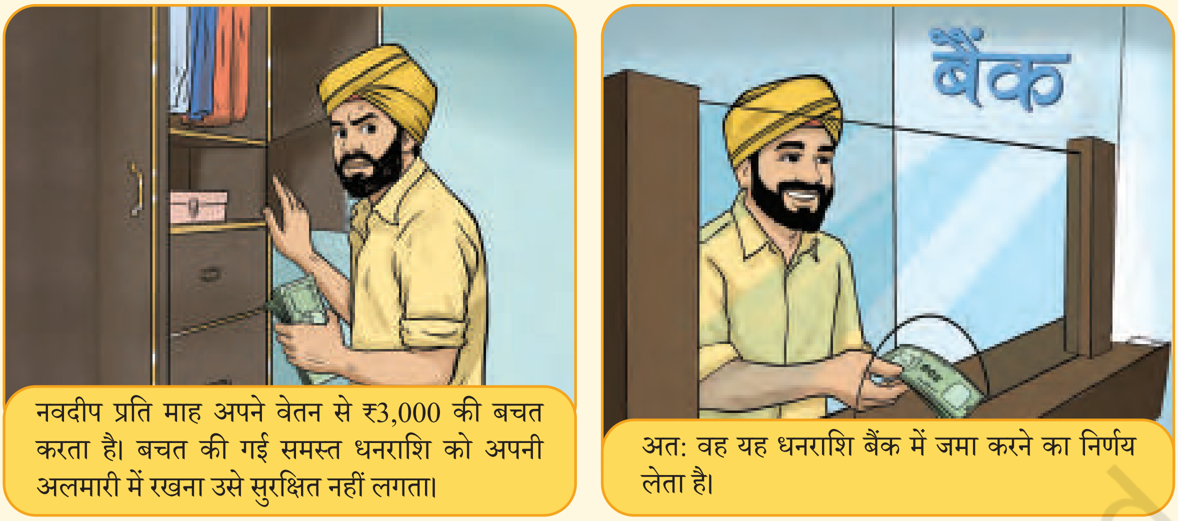

चित्र 8.3 — (क) नवदीप द्वारा धनराशि जमा करना

चित्र 8.3 — (ख) रीमा द्वारा ऋण के रूप में बैंक से धन प्राप्त करना

आइए विचार करें

→ नवदीप को क्यों लगता है कि नकद धनराशि को घर पर रखने की तुलना में बैंक में जमा करना अधिक उचित है?

→ क्या नवदीप और रीमा बैंक के बिना एक-दूसरे को सीधे धनराशि उधार दे सकते हैं? ऐसी स्थिति में क्या-क्या समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं? चर्चा कीजिए।

बैंक क्या हैं और वे क्या करते हैं?

बैंक बचत, धन निकासी तथा ऋण जैसी सेवाएँ प्रदान करके मौद्रिक आदान-प्रदान को सरल बनाते हैं। इन सेवाओं का उपयोग विभिन्न व्यक्तियों, जैसे— कृषकों, दुकानदारों, चिकित्सकों/उपचारकों के साथ-साथ व्यवसायों और संस्थानों द्वारा भी किया जाता है। बैंक की सेवाओं का लाभ उठाने के लिए सर्वप्रथम बैंक में स्वयं का खाता खोलना आवश्यक होता है। खाता खोलने के पश्चात वह व्यक्ति या व्यवसाय 'खाताधारक' कहलाता है और बैंक उसे विभिन्न प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध कराता है। आइए, इन सेवाओं के विषय में जानें।

जमा (डिपॉजिट्स)
बैंक खाते में रखे गए धन को बैंक के नियमों के अनुसार निकाला जा सकता है और इस जमा राशि पर प्रायः ब्याज भी प्राप्त होता है।

जमा राशि रखना

बैंक व्यक्तियों द्वारा बैंक-खाते में **धनराशि** को जमा करता है और उस धन का रख-रखाव करता है। वे इस धनराशि को केवल सुरक्षित ही नहीं रखते अपितु इसे व्यवसायों अथवा

बैंक निम्नलिखित प्रकार के खाते उपलब्ध कराते हैं—

बचत खाता
यह खाता उन व्यक्तियों के लिए होता है, जो नियमित रूप से धन की बचत करते हैं और अपनी बचत पर ब्याज अर्जित करना चाहते हैं। इसे न्यूनतम जमाराशि के साथ खोला जाता है। इस खाते में आवश्यकतानुसार धन जमा किया जा सकता है तथा निकाला भी जा सकता है, किंतु जमाकर्ता द्वारा प्रतिमाह धन-निकासी की संख्या सीमित होती है।

चालू खाता
यह खाता व्यवसायों और व्यापारियों के लिए होता है जिन्हें बार-बार भुगतान करने और भुगतान प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। इस खाते पर ब्याज नहीं मिलता किंतु सामान्यतः इसमें धन जमा करने अथवा निकालने की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं होता।

सावधि जमा खाता
इसमें एकमुश्त जमा की जाने वाली राशि होती है जिसे एक निश्चित अवधि—जैसे 3 या 5 वर्ष के लिए रखा जाता है। निर्धारित अवधि पूरी होने पर बैंक मूल राशि के साथ ब्याज लौटाता है। यह ब्याज सामान्यतः बचत खाते के ब्याज की तुलना में अधिक होता है।

चित्र 8.4 — बैंक-खातों के प्रकार

© NCERT not to be republished

अन्य व्यक्तियों को ऋण के रूप में भी देते हैं। इसके प्रतिफल में बैंक हमें एक निश्चित अवधि (जैसे— त्रैमासिक, मासिक या वार्षिक) पर 'ब्याज' के रूप में कुछ अतिरिक्त धनराशि प्रदान करते हैं। इससे हमारे द्वारा बचत की गई धनराशि समय के साथ बढ़ती जाती है। इस प्रकार ब्याज के माध्यम से भी बैंक व्यक्तियों को बचत के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

त्रैमासिक
इसका तात्पर्य है— वर्ष में चार बार होने वाला, अर्थात प्रत्येक तीन महीने के अंतराल में होने वाला।

आइए, समझते हैं कि यदि आप लंबे समय तक बचत करें, तो आपकी बचत किस प्रकार उल्लेखनीय रूप से बढ़ सकती है।

ब्याज
यह वह राशि है जो धन को उधार लेने पर देनी पड़ती है अथवा धन उधार देने पर प्राप्त होती है। इसे प्रायः प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कल्पना कीजिए कि आपको अपने जन्मदिन पर अपनी माता से ₹1,000 प्राप्त होते हैं। आप यह धनराशि बैंक में जाकर अपने खाते में जमा कर देते हैं। यदि आप इस धनराशि को नहीं निकालते हैं, तो बैंक प्रतिवर्ष इस पर 6% ब्याज देता है। आइए, पता लगाते हैं कि एक वर्ष के अंत में आपके पास कितना धन होगा—

मूल राशि + एक वर्ष का ब्याज अर्थात

₹1,000 + ₹1,000 का 6%

$$= ₹1,000 + \left(\frac{6}{100} \times 1,000\right) = ₹1,000 + 60 = ₹1,060$$

यदि आप अगले वर्ष भी यह धनराशि खर्च नहीं करते हैं, तो आपको ब्याज केवल ₹1,000 पर नहीं अपितु ₹1,060 पर मिलेगा जो कि ₹1,060 का 6% = ₹63.60 होगा।

इस प्रकार, आपको ब्याज केवल मूल धनराशि ₹1,000 पर ही नहीं मिलता है, अपितु पिछले वर्षों में अर्जित ब्याज सहित समस्त धनराशि पर प्राप्त होता है। जैसा कि आपने देखा कि प्रथम वर्ष में ब्याज ₹60 था, जबकि द्वितीय वर्ष में यह बढ़कर ₹63.60 हो गया और आगामी वर्षों में इसमें और वृद्धि होगी। पूर्व में अर्जित ब्याज पर ब्याज मिलने की इस प्रक्रिया को 'चक्रवृद्धि' कहा जाता है। यदि आप 12 वर्षों तक इस धन की निरंतर बचत करते रहें, तो आपकी ₹1,000 की धनराशि बढ़कर ₹2,012.20 हो जाएगी। यह दर्शाता है कि चक्रवृद्धि एक शक्तिशाली वित्तीय अवधारणा है, जो समय के साथ आपके धन को तीव्र गति से बढ़ाने में सहायक होती है।

चित्र 8.5 — चक्रवृद्धि के कारण धन में वृद्धि

© NCERT not to be republished

चक्रवृद्धि का चमत्कार— राजा और साधु की कथा

एक समय की बात है। केरल के अंबलप्पुझा का एक राजा था। वह शतरंज के प्रति अपने विशेष प्रेम के लिए प्रसिद्ध था। एक बार उस राजा ने अपने राज्य में यात्रा पर आए एक साधु को शतरंज के खेल के लिए चुनौती दी। राजा ने अति उत्साह में यह घोषणा की कि यदि साधु उसे खेल में पराजित कर दे, तो वह उसे वांछित पुरस्कार देगा। साधु ने किसी बड़े पुरस्कार का प्रस्ताव नहीं रखा। उसने केवल इतना कहा कि शतरंज के पहले वर्ग पर चावल का एक दाना रखा जाए, दूसरे वर्ग पर दो दाने, तीसरे पर चार दाने, और इसी प्रकार प्रत्येक अगले 64 वर्ग पर दानों की संख्या दोगुनी होती जानी चाहिए। साधु की यह साधारण इच्छा सुनकर राजा आश्चर्यचकित हुआ और तुरंत सहमत हो गया। किंतु खेल में राजा साधु से हार गया। तब उसने अपने सभा के सदस्यों को आदेश दिया कि वचन के अनुसार शतरंज के प्रत्येक वर्ग पर चावल के दाने रखे जाएँ। आठवें वर्ग तक दानों की संख्या 128 हो गई, जो कि ऊपर की पंक्ति का अंतिम वर्ग था। नौवें वर्ग पर 256 दाने रखे गए, दसवें पर 512, ग्यारहवें पर 1024 दाने और यह क्रम इसी प्रकार आगे बढ़ता गया। जैसे-जैसे दानों की संख्या दोगुनी होती गई, वैसे-वैसे दानों की कुल मात्रा अत्यंत तीव्रता से बढ़ने लगी। सोलहवें वर्ग तक यह संख्या 32,768 तक पहुँच गई और बत्तीसवें वर्ग तक पहुँचते-पहुँचते यह संख्या 210 करोड़ से भी अधिक हो गई। राजा को यह बोध हुआ कि घातीय वृद्धि कितनी शक्तिशाली हो सकती है, परंतु यह बोध उसे भारी कीमत चुकाने के पश्चात ही हुआ। यह कथा दर्शाती है कि चक्रवृद्धि कैसे कार्य करती है और किस प्रकार छोटी-छोटी राशियाँ समय के साथ बढ़कर विशाल धनराशि में परिवर्तित हो जाती हैं।

चित्र. 8.6

आइए विचार करें

→ इतनी अधिक संख्या में जमा और निकासी का हिसाब कैसे रखा जाता है? बैंक इसके लिए पासबुक नामक एक डायरी-जैसा प्रलेख प्रदान करता है, जिसमें सभी जमा (प्राप्ति) और निकासी (भुगतान) से संबंधित लेन-देन का रिकॉर्ड अंकित रहता है। इस पासबुक को बैंक में नियमित रूप से अद्यतन (अपडेट) कराया जा सकता है।

→ चित्र 8.7 में दी गई पासबुक को देखिए। व्यय (डेबिट) और आय (क्रेडिट) के अंतर्गत अंकित सभी विवरणों पर ध्यान दीजिए। वित्तीय लेन-देन का रिकॉर्ड रखना क्यों आवश्यक है? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

व्यय (डेबिट) खाते से धन निकालना।

आय (क्रेडिट) खाते में धन प्राप्त होना।

not to be published

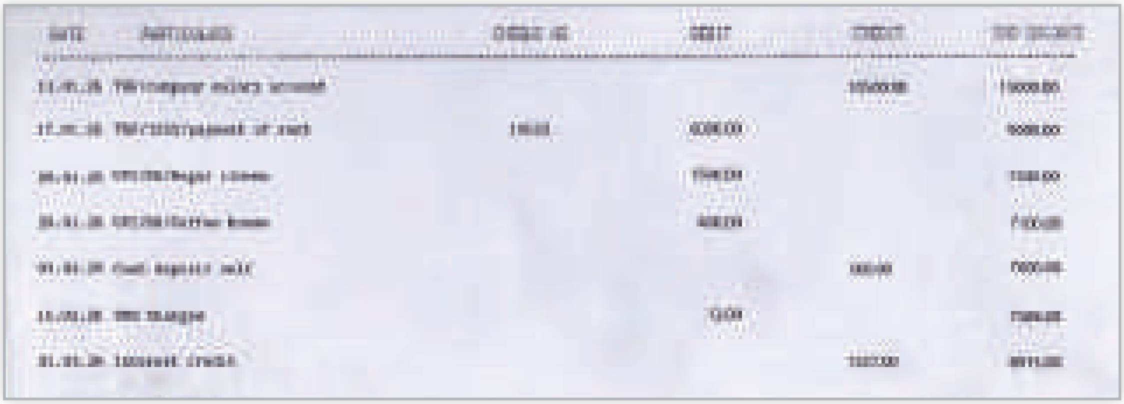

चित्र 8.7 — पासबुक की प्रविष्टियाँ

ऋण या क्रेडिट प्रदान करना

घर या वाहन क्रय करने तथा शिक्षा के व्यय को पूर्व करने आदि जैसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए बैंक ऋणधारियों को विभिन्न प्रकार के ऋण (लोन) प्रदान करते हैं। व्यवसाय भी नई मशीनरी और कच्चा माल क्रय करने, उत्पादों के परिवहन, बाजार में नए उत्पाद लाने आदि के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। जैसे बैंक जमाकर्ताओं को उनकी बचत पर ब्याज देते हैं, वैसे ही वे दिए गए ऋण पर ऋणधारियों से ब्याज भी वसूलते हैं। एक निर्धारित अवधि के पश्चात ऋणधारी बैंक द्वारा लगाए गए ब्याज-सहित ऋण की राशि वापस चुकाता है।

ऋण (लोन)
बैंकों अथवा वित्तीय संस्थानों से उधार ली गई वह धनराशि, जिसे भविष्य में ब्याज-सहित चुकाने का दायित्व होता है।

इसे अनदेखा न करें

जमाकर्ताओं को बैंक उनकी बचत जमा पर कम ब्याज-दर का भुगतान करते हैं और ऋणधारियों से ऋण पर अधिक ब्याज-दर लेते हैं। ब्याज-दरों का यह अंतर बैंकों की आय का एक प्रमुख स्रोत होता है। आइए, इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं।

आनंद अपने बैंक खाते में ₹200 जमा करता है और बैंक उसकी बचत पर 2% की दर से उसे ब्याज देता है। बैंक वही ₹200 की राशि श्रेया को ऋण के रूप में देता है और उस पर 5% की दर से ब्याज वसूल करता है। श्रेया ऋण पर ब्याज के रूप में ₹10 (₹200 का 5%) तथा मूल ऋण राशि ₹200, कुल मिलाकर ₹210 की राशि बैंक को वापस करती है। आनंद को उसकी जमा राशि पर बैंक ब्याज के रूप में ₹4 (₹200 का 2%) का भुगतान करता है और इस प्रकार बैंक को ₹6 की आय होती है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बैंकों के पास आरक्षित धन (रिजर्व मनी) भी होता है और वे व्यक्तियों या व्यवसायों को ऋण के रूप में अपनी समस्त जमा धनराशि नहीं देते हैं।

© NCERT not to be republished

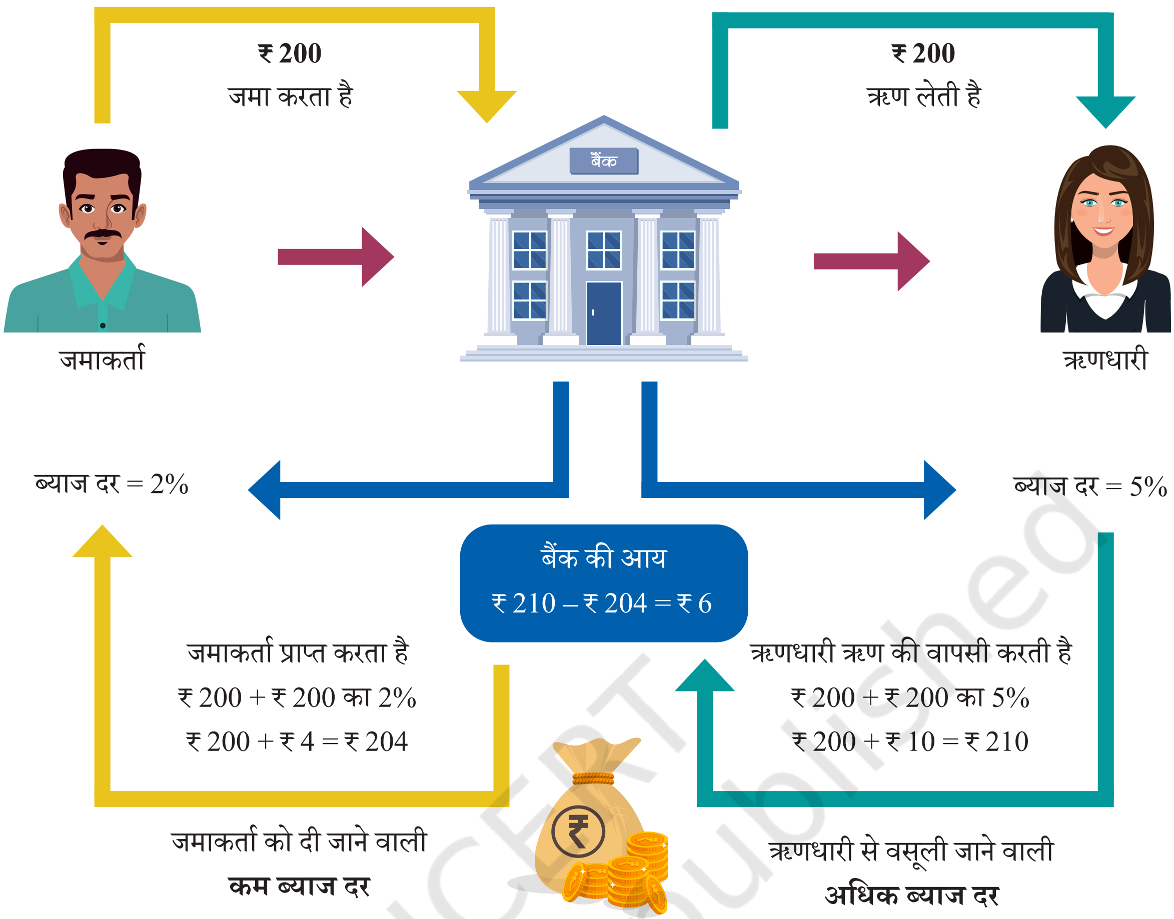

चित्र 8.8 — बैंकों द्वारा धन अर्जित करने की प्रक्रिया को दर्शाने वाला एक सरल आरेख

भारत में 'जन धन योजना' ने बैंकिंग में किस प्रकार क्रांति ला दी

2014 से पूर्व भारत में केवल 15 करोड़ व्यक्तियों के पास बैंक खाते थे और अधिकांश व्यक्ति नकद लेन-देन पर निर्भर थे। वर्ष 2014 में प्रारंभ की गई 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' का उद्देश्य प्रत्येक भारतीय, विशेषत: अल्प आय वर्ग के व्यक्तियों, को बिना न्यूनतम शेष राशि या शुल्क के बैंक में खाता उपलब्ध कराना था। इस योजना के अंतर्गत अब तक 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले जा चुके हैं, जिनमें अधिकांश खाते महिलाओं के हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान में समाज के सभी वर्गों के व्यक्ति बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कृषक लघु व्यवसाय आरंभ करने या अपने कृषि संबंधित कार्यों का विस्तार करने के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। श्रमिकों को उनका पारिश्रमिक सीधे उनके बैंक खातों में प्राप्त होता है और शैक्षणिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को संस्थानों द्वारा छात्रवृत्तियाँ सीधे उनके खातों में ही भेजी जाती हैं। इस प्रकार के प्रत्यक्ष अंतरण (डायरेक्ट ट्रांसफर) से मध्यस्थों की भूमिका न्यून हुई है और धनराशि का समय पर वितरण सुनिश्चित हुआ है।

अन्य वित्तीय संस्थान

चित्र 8.9 — डाकघर

बैंकों के अतिरिक्त भारतीय डाकघर भी अनेक प्रकार की वित्तीय सेवाएँ प्रदान करते हैं। इनमें राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र, किसान विकास पत्र खाते तथा सुकन्या समृद्धि खाते जैसी बचत योजनाएँ सम्मिलित हैं। देशभर में फैला इनका व्यापक जाल और सुदूर क्षेत्रों में भी इनकी उपस्थिति भारतीय डाक को बचत का एक लोकप्रिय माध्यम बनाती है।

इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य वित्तीय संस्थान भी हैं जो विशिष्ट क्षेत्रों को सहयोग प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम बिजली और वस्त्र जैसे क्षेत्रों में व्यवसायों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) कृषि, ग्रामोद्योगों तथा सड़कों और सिंचाई जैसी अवसंरचना के लिए ऋण देने वाले बैंकों को वित्तपोषण प्रदान करके ग्रामीण विकास में सहयोग करता है।

जब देश में अनेक बैंक और वित्तीय संस्थान कार्यरत हों, तो यह आवश्यक हो जाता है कि सभी के लिए स्पष्ट नियम और अधिनियम हों। परंतु प्रश्न यह है कि ये नियम निर्धारित कौन करता है?

भारतीय रिजर्व बैंक — बैंकों का बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) वह संस्था है जो भारत की बैंकिंग प्रणाली का निरीक्षण करती है। इसे भारत का केंद्रीय बैंक भी कहा जाता है। प्रत्येक देश में एक केंद्रीय बैंक होता है जो अपनी बैंकिंग व्यवस्था से संबंधित नीतियों का पर्यवेक्षण और संचालन करता है।

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना वर्ष 1935 में हुई थी और प्रारंभ में यह केंद्रीय बैंक के कुछ कार्य करता था। स्वतंत्रता के पश्चात आर.बी.आई. को भारत सरकार को स्थानांतरित कर दिया गया और वर्ष 1949 से यह बैंकों के बैंक तथा केंद्रीय बैंक के रूप में कार्य कर रहा है। आर.बी.आई. अन्य बैंकों के खातों का रख-रखाव करता है और उनके मध्य धनराशि के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह बैंकों और सरकार को ऋण भी उपलब्ध कराता है।

© NCERT not to be republished

चित्र 8.10 — दिल्ली स्थित भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) कार्यालय का प्रवेश-द्वार

आर.बी.आई. जिन विषयों से संबंधित नियम और अधिनियम निर्धारित करता है, वे हैं—

- भारतीय मुद्रा जैसे बैंक नोटों का मुद्रण और वितरण
- मानक (बेंचमार्क) ब्याज दरों का निर्धारण

एक रोचक तथ्य यह है कि दिल्ली स्थित आर.बी.आई. कार्यालय के प्रवेश-द्वार पर यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार यक्ष एक प्रकार के अर्धदेवता होते हैं, जो धन के देवता कुबेर के धनकोष के रक्षक माने जाते हैं। इस प्रकार, मुद्रा निर्गत करने का एकमात्र अधिकार रखने तथा बैंकों के बैंक के रूप में अपनी भूमिका निभाने के कारण आर.बी.आई. की तुलना कुबेर से की जा सकती है।

मानक (बेंचमार्क) ब्याज दर
वह आधार ब्याज दर, जिसे भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) वाणिज्यिक बैंकों को धन उधार देने के लिए निर्धारित करता है।

आइए विचार करें

→ प्राचीन भारत में मंदिर बैंक के समान कार्य करते थे। यद्यपि वे आधुनिक बैंकों के समान जन-सामान्य से धन जमा नहीं करते थे। वे शिल्पकारों, व्यापारियों तथा स्थानीय शासकों को अवसंरचना निर्माण के लिए ऋण प्रदान करते थे। मंदिरों और संबंधित पक्षों के मध्य किए गए अनुबंध ताम्रपत्रों पर अंकित किए जाते थे। ये ताम्रपत्र वर्तमान में भी उपलब्ध हैं। इनके माध्यम से हमें यह समझने में सहायता प्राप्त होती है कि उस समय ये संस्थाएँ किस प्रकार कार्य करती थीं।

चित्र 8.11 — पांड्य राज्य के अभिलेखों वाले ताम्रपत्र

→ तमिलनाडु के कोडुंबलुर नामक स्थान से प्राप्त 13वीं शताब्दी का ताम्रपत्र अभिलेख भी ऐसा ही एक अन्य उदाहरण है। अभिलेख में उन समुदायों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने तिरुमुडुकुन्रमुडैय-नयनार मंदिर से ब्याज चुकाने के अनुबंध के साथ ऋण लिया था।

© NCERT not to be republished

भुगतान के माध्यम और प्रणालियाँ

भुगतान के माध्यम और भुगतान की प्रणालियाँ दोनों ही वित्तीय अवसंरचना के अन्य महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इनके माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक धन के स्थानांतरण में सहायता मिलती है। भुगतान के कुछ माध्यमों में नकद, चेक तथा डेबिट कार्ड सम्मिलित हैं। वर्तमान समय में 'एकीकृत भुगतान इंटरफेस' (यू.पी.आई.) जैसी भुगतान प्रणालियाँ धन-स्थानांतरण का एक त्वरित और सुविधाजनक माध्यम बन गई हैं। आइए, इनके विषय में और अधिक जानें।

परंतु इससे पहले यह समझते हैं कि खाताधारक बैंक-जमा से नकद राशि किस प्रकार निकाल सकते हैं।

सामान्यतः बैंक खाते से बचत राशि निम्नलिखित विधियों से निकाली जा सकती हैं—

1. बैंक में निकासी पर्ची (विदड्रॉल स्लिप) भरकर उसे नकद काउंटर पर जमा किया जाता है और खाते से नकद राशि प्राप्त की जाती है। आप इस अध्याय के अंत में स्वयं एक निकासी पर्ची भरने का अभ्यास कर सकते हैं!
2. खाता खोलते समय बैंक अपने ग्राहकों को डेबिट कार्ड भी प्रदान करते हैं। डेबिट कार्ड का उपयोग स्वचालित टेलर मशीनों (ए.टी.एम.) से किसी भी समय नकद राशि निकालने के लिए किया जा सकता है। ये ए.टी.एम. छोटे बैंकों के समान होते हैं और बस अड्डों, स्थानीय बाजारों, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, मॉल आदि जैसे सार्वजनिक स्थानों पर 24×7 उपलब्ध रहते हैं। नकद राशि निकालने के लिए डेबिट कार्ड को मशीन में डाला जाता है और फिर पिन (व्यक्तिगत पहचान संख्या) अंकित कर निकाली जाने वाली राशि को अंकित करना होता है।

चित्र 8.12 — डेबिट कार्ड
(अग्र एवं पृष्ठ भाग)

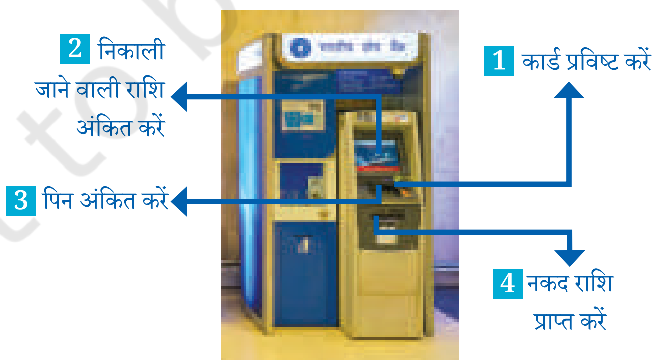

चित्र 8.13 — ए.टी.एम.

यू.पी.आई.
यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस

भुगतान प्रणाली
यह एक ऐसी व्यवस्था है, जो वित्तीय लेन-देन के समाशोधन और निपटान को सुगम बनाती है तथा व्यक्तियों, व्यवसायों और संगठनों को एक-दूसरे के बीच धन का स्थानांतरण (आदान-प्रदान) करने की सुविधा प्रदान करती है।

पिन
एक संख्यात्मक कूट/कोड (जो सामान्यतः 4 से 6 अंकों का होता है) यह पहचान-सत्यापन एवं सुरक्षा के लिए विभिन्न एप्लीकेशन में प्रयुक्त होता है, विशेषकर ए.टी.एम., डेबिट कार्ड आदि के द्वारा किए जाने वाले वित्तीय लेन-देन में।

© NCERT not to be republished

एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में धन कैसे स्थानांतरित किया जा सकता है?

चेक

चेक एक कागजी माध्यम होता है जिसकी सहायता से आप सीधे अपने बैंक खाते से किसी व्यक्ति को भुगतान कर सकते हैं। बैंक आपको बहुत से चेकों वाली एक चेकबुक प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यदि आपको अपने मित्र रोहन को ₹5,000 का भुगतान करना है, तो आप चेक पर निर्धारित राशि और रोहन का नाम लिखकर अपने हस्ताक्षर करते हैं। इसके उपरांत रोहन उस चेक को अपने बैंक में जमा करता है। परिणामस्वरूप आपके खाते से राशि निकाली जाती है (डेबिट होती है) और वही राशि रोहन के बैंक खाते में जमा हो जाती है (क्रेडिट होती है)।

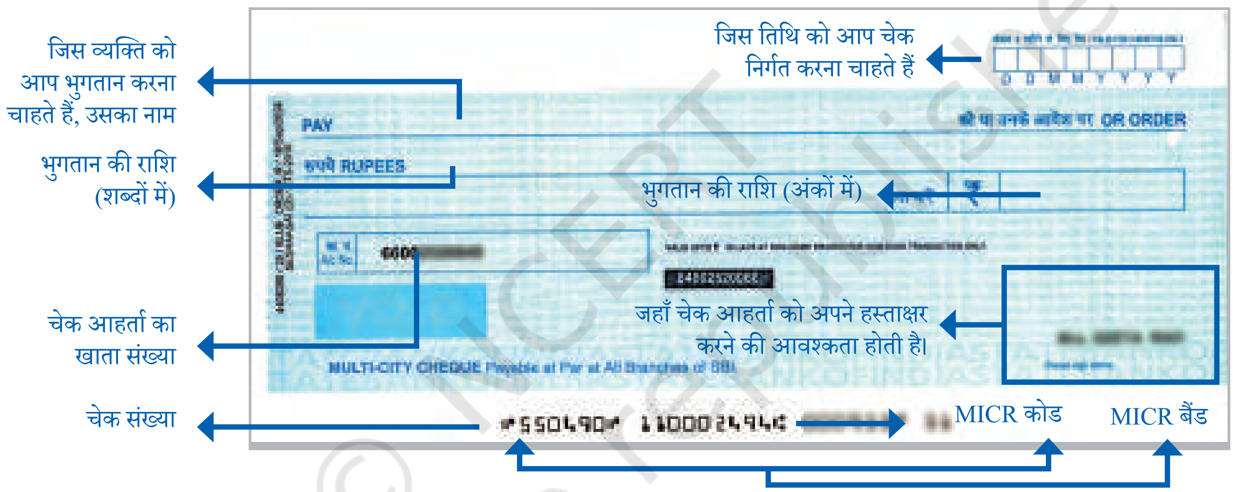

चित्र 8.14 — चेक का प्रारूप

चेक के माध्यम से धन का स्थानांतरण या भुगतान करने के लिए आपको बैंक में स्वयं जाना पड़ता है और इसमें समय भी लगता है। इसके विपरीत, इलेक्ट्रॉनिक भुगतान माध्यम प्रेषक के खाते से प्राप्तकर्ता के खाते में तुरंत धन स्थानांतरित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। इन्हें इलेक्ट्रॉनिक भुगतान कहा जाता है। इनमें से कुछ का विवरण नीचे दिया गया है।

डेबिट कार्ड और विक्रय बिंदु (पी.ओ.एस.) यंत्र

किराना, कपड़ों की दुकान और मेडिकल स्टोर जैसी खुदरा दुकानों में भुगतान करने के लिए डेबिट कार्ड का उपयोग किया जा सकता है। एक ओर जहाँ डेबिट कार्ड ए.टी.एम. से नकद निकासी में सहायक होते हैं, वहीं दूसरी ओर इनके माध्यम से ग्राहकों के खातों से दुकानदार के खातों में सीधे ही धन का स्थानांतरण संभव हो जाता है। ग्राहक अपने डेबिट कार्ड को पी.ओ.एस. मशीन में डालते हैं या स्वाइप करते हैं। इसके पश्चात उस मशीन में भुगतान की

© NCERT not to be republished

जाने वाली धनराशि अंकित करते हैं और पिन प्रविष्ट करते हैं। कैशियर भी भुगतान की जाने वाली राशि अंकित कर सकता है जबकि ग्राहक स्वयं अपना पिन अंकित करता है। इसके उपरांत अंकित राशि तुरंत ग्राहक के खाते से कट जाती है।

चित्र 8.15 — पी.ओ.एस. मशीन में डेबिट कार्ड का उपयोग

इंटरनेट बैंकिंग (नेटबैंकिंग)

इंटरनेट बैंकिंग अथवा ऑनलाइन बैंकिंग धन-स्थानांतरण का एक अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। इसके माध्यम से खाताधारक कंप्यूटर या स्मार्ट फोन का उपयोग कर बैंक की वेबसाइट या मोबाइल एप्लिकेशन पर अपने खाते की उपलब्ध राशि और लेन-देन का विवरण देख सकते हैं तथा धन का स्थानांतरण कर सकते हैं।

चित्र 8.16 — कंप्यूटर के माध्यम से इंटरनेट बैंकिंग

मोबाइल द्वारा भुगतान

इसके अतिरिक्त, मोबाइल फोन के माध्यम से भी डिजिटल भुगतान किए जाते हैं। इसके लिए यू.पी.आई. पर आधारित 'भारत इंटरफेस फॉर मनी' (भीम) जैसे डिजिटल भुगतान एप्लिकेशन का उपयोग किया जाता है। यू.पी.आई. प्राप्तकर्ता के मोबाइल नंबर या क्यू.आर. कोड के माध्यम से धन का सरल और तीव्र डिजिटल स्थानांतरण संभव बनाता है। इससे भुगतान और धनप्राप्ति दोनों शीघ्रता से हो जाती हैं। यह प्रणाली पासबुक को बार-बार अद्यतन कराने की आवश्यकता को कम करती है तथा उपयोगकर्ताओं को अपने मोबाइल फोन पर किसी भी समय खाते में उपलब्ध राशि (बैलेंस) को देखने और लेन-देन का विवरण प्राप्त करने की सुविधा देती है।

चित्र 8.17 — भुगतान के लिए प्रयुक्त क्यू.आर. कोड

© NCERT not to be republished

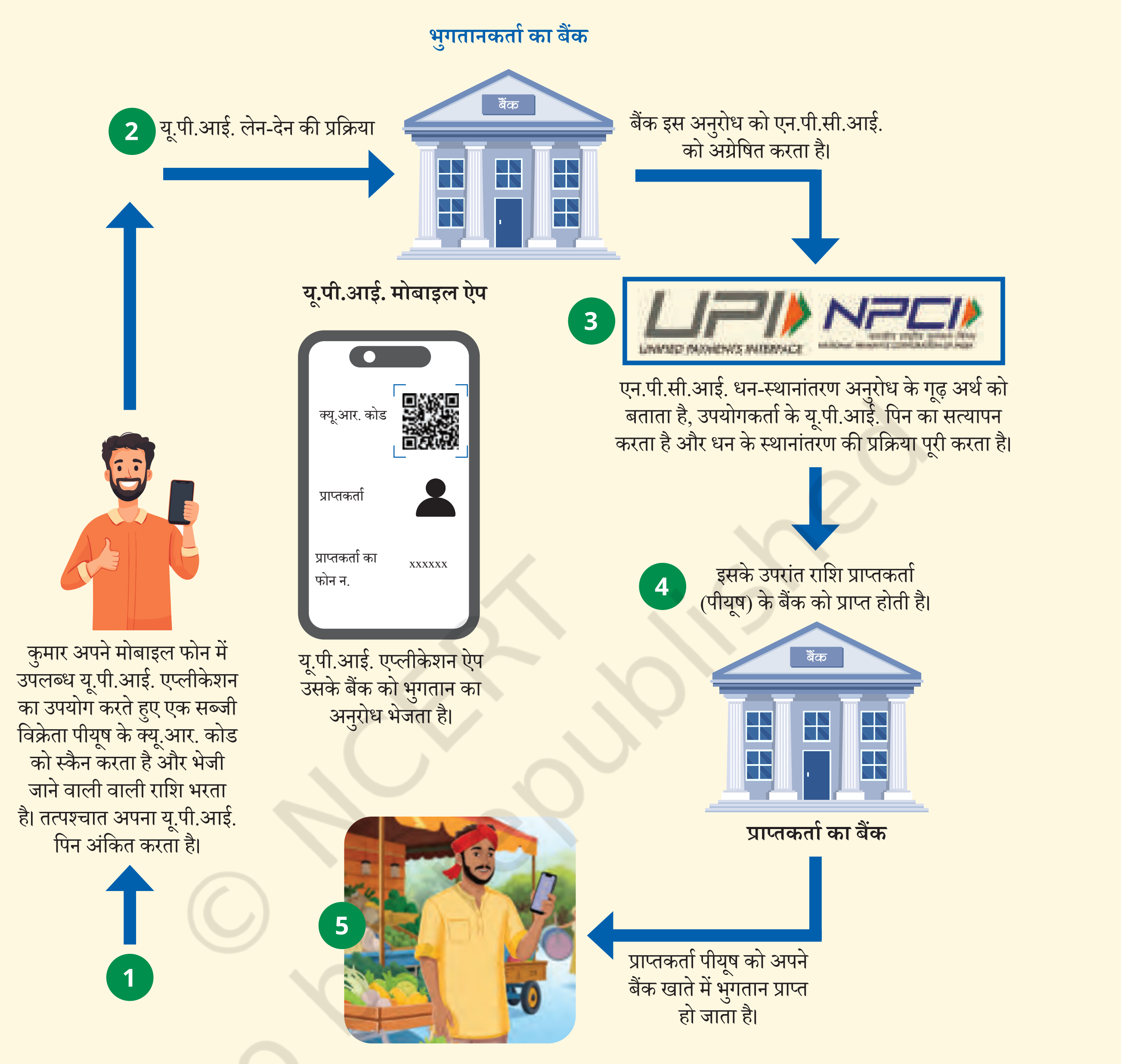

चित्र 8.18 — यू.पी.आई. के माध्यम से क्रेता और विक्रेता के मध्य डिजिटल लेन-देन की प्रक्रिया

एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यू.पी.आई.) — भारत द्वारा विश्व को भुगतान प्रणालियों का उपहार

परंपरागत रूप से एक व्यक्ति के बैंक खाते से दूसरे व्यक्ति के बैंक खाते में धन स्थानांतरित करने के लिए चेक पर प्राप्तकर्ता का विवरण भरना पड़ता था और उसे बैंक के ड्रॉप बॉक्स में डालना होता था या किसी बैंक कर्मचारी को सौंपना होता था।

© NCERT not to be republished

इस प्रक्रिया में बहुत समय लगता था और इसके कारण अधिकांश लोग बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने से हिचकिचाते थे। परिणामस्वरूप नकद लेन-देन पर अत्यधिक निर्भरता बनी रही, जिससे प्रतिदिन अरबों रुपए बिना किसी रिकॉर्ड के उपयोग में आते थे।

यह स्थिति वर्ष 2016 में तब परिवर्तित हुई जब 'भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम' (एन.सी.पी.आई.) ने यू.पी.आई. का प्रारंभ किया। यू.पी.आई. एक तीव्र, सुरक्षित और डिजिटल भुगतान प्रणाली है, जो धन के त्वरित स्थानांतरण को संभव बनाती है। इसका एक उदाहरण समझने के लिए चित्र 8.18 देखिए।

क्या आप देख पा रहे हैं कि किस प्रकार यू.पी.आई. ने कुमार और पीयूष के मध्य डिजिटल लेन-देन को अत्यंत सरल बना दिया? आपको स्मरण होगा कि कोविड-19 महामारी के समय संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए सामाजिक दूरी बनाए रखना आवश्यक हो गया था। उस समय नकद-रहित लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए यू.पी.आई. की लोकप्रियता में अत्यधिक वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त, इसका उपयोगकर्ता-अनुकूल डिजाइन और अनेक भाषाओं में उपलब्धता इसे सभी के लिए सुलभ बनाते हैं।

आइए विचार करें

भारत की डिजिटल भुगतान क्रांति अब तीव्रता से अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार फैल रही है। वर्ष 2022 में नेपाल भारत की यू.पी.आई. प्रणाली को अपनाने वाला प्रथम देश बना। वर्तमान में, संयुक्त अरब अमीरात, फ्रांस, श्रीलंका, भूटान, मॉरीशस आदि देशों ने भी इसे अपनाया है और अनेक अन्य देश भी इसमें अपनी अधिक रुचि दर्शा रहे हैं। यह त्वरित, कुशल और सुरक्षित भुगतान प्रणाली वास्तव में भुगतान प्रणालियों की दुनिया में भारत का एक महत्त्वपूर्ण उपहार है।

स्टॉक बाजार

इससे पूर्व आप खुदरा, थोक, ऑनलाइन आदि विभिन्न प्रकार के बाजारों के विषय में पढ़ चुके हैं। शेयर बाजार की कल्पना एक विशाल ऑनलाइन पुस्तक भंडार से की जा सकती है, परंतु यहाँ लोग पुस्तकों के स्थान पर शेयरों का क्रय-विक्रय करते हैं।

शेयर
शेयर किसी कंपनी में स्वामित्व की एक इकाई होता है, जो उसकी पूँजी (कैपिटल स्टॉक) के एक भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

मान लीजिए आपका एक छोटा-सा भोजनालय है और आप उसमें विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के साथ उसका विस्तार करना चाहते हैं। परंतु यदि आपके पास पर्याप्त धन नहीं है, तो आप लाभ में हिस्सा देने के बदले अपने मित्रों से धन उधार ले सकते हैं तथा इस स्थिति में वे निवेश के द्वारा आपके व्यवसाय के आंशिक स्वामी बन जाते हैं। इस प्रकार शेयर किसी कंपनी में आंशिक स्वामित्व को दर्शाता है। अतः जब आप किसी कंपनी का शेयर

© NCERT not to be republished

निवेश
ऐसी प्रक्रिया जिसमें संसाधनों को उन परिसंपत्तियों में लगाया जाता है, जिनके मूल्य समय के साथ बढ़ने की अपेक्षा होती है।

क्रय करते हैं, तो अपने निवेश के कारण आप उस कंपनी के आंशिक स्वामी बन जाते हैं। जितने अधिक शेयर आपके पास होते हैं, उतना ही अधिक आपका स्वामित्व होता है। यदि किसी कंपनी को एक बड़ी रोटी माना जाए, तो उस रोटी का प्रत्येक टुकड़ा एक शेयर है। शेयरों के समूह को स्टॉक कहा जाता है। स्टॉक होने से व्यक्तियों को अपनी बचत को वहाँ निवेश करने का अवसर मिलता है, जहाँ उन्हें शेयर की कीमत में वृद्धि होने पर अपने निवेश के मूल्य के बढ़ने की अपेक्षा होती है; दूसरी ओर, शेयर निर्गत करने से कंपनियों को अपने संचालन के लिए पूँजी जुटाने में सहायता मिलती है।

चित्र 8.19 — बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज

शेयर विनिमय (स्टॉक एक्सचेंज) में शेयरों का वास्तविक क्रय और विक्रय होता है। भारत में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बी.एस.ई.) की स्थापना वर्ष 1875 में हुई थी और यह विश्व के सबसे पुराने स्टॉक एक्सचेंजों में से एक है। उस समय शेयरों के लेन-देन कागजी पर्चियों के माध्यम से हाथ से किए जाते थे, जिन्हें आधुनिक युग में उन्नत कंप्यूटरों और अन्य उपकरणों द्वारा किए जाने वाले डिजिटल लेन-देन ने प्रतिस्थापित कर दिया है।

शेयर विनिमय
ऐसा बाजार जहाँ शेयर जैसी वित्तीय प्रतिभूतियों का क्रय और विक्रय किया जाता है।

वस्तुओं की कीमतों की भाँति ही शेयर की कीमतें भी घटती-बढ़ती रहती हैं। जब अनेक कंपनियों के शेयर की कीमतों में एक साथ गिरावट आती है, तो इसे शेयर बाजार में भारी गिरावट (स्टॉक मार्केट क्रैश) कहा जाता है। इसके विपरीत जब शेयर कीमतों में व्यापक वृद्धि होती है, तो उसे शेयर बाजार में उछाल (स्टॉक मार्केट बूम) कहा जाता है।

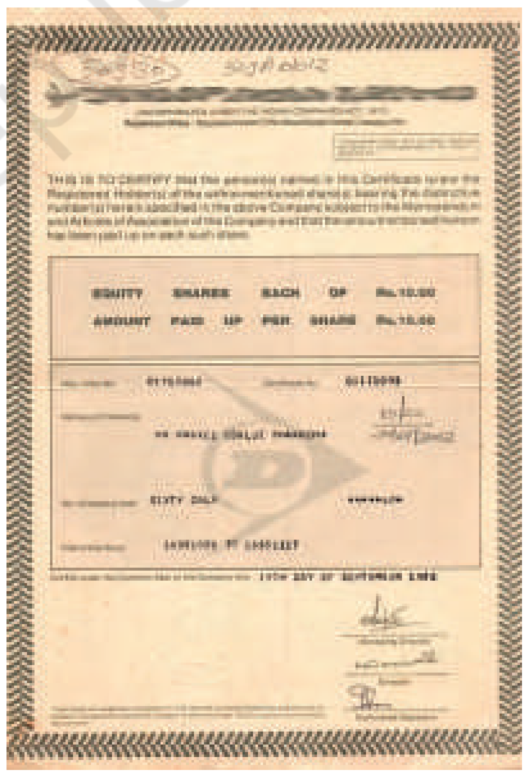
चित्र 8.20 — पुराने समय का शेयर प्रमाणपत्र

© NCERT not to be republished

चित्र 8.21 — अनेक कंपनियों के शेयर की कीमतों में वृद्धि से उत्पन्न शेयर बाजार में उछाल (स्टॉक मार्केट बूम)

चित्र 8.22 — अनेक कंपनियों के शेयर की कीमतों में गिरावट से उत्पन्न शेयर बाजार में गिरावट (स्टॉक मार्केट क्रैश)

शेयरों के व्यापार से लाभ अथवा हानि दोनों ही हो सकती है क्योंकि उनकी कीमतें अनेक कारकों के प्रभाव से घटती-बढ़ती रहती हैं।

यदि कोई कंपनी अच्छा प्रदर्शन कर रही हो और लोगों को यह विश्वास हो कि वह लाभ अर्जित करेगी तो उसके शेयरों की कीमतें बढ़ जाती हैं। इसके विपरीत यदि कंपनी को किसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़े, जैसे— घटिया उत्पाद, श्रमिकों की हड़ताल अथवा भारी वित्तीय क्षति, तो उसके शेयरों की माँग घट जाती है और परिणामस्वरूप शेयरों की कीमतें गिर जाती हैं। किसी कंपनी के प्रदर्शन के अतिरिक्त, सरकारी नीतियों में परिवर्तन जैसे— नए कानून, कर-नियम, राजनैतिक अस्थिरता, युद्ध अथवा आर्थिक आघात (इकोनॉमिक शॉक) भी शेयर-कीमतों में उतार-चढ़ाव का कारण बन सकते हैं।

कर-नियम

कर वह अनिवार्य अंशदान है जिसे व्यक्ति और व्यवसाय अपनी आय तथा लाभ पर सरकार को देते हैं। कुछ वस्तुओं, सेवाओं और लेन-देन की लागत में भी कर जोड़ा जाता है। विभिन्न करों के भुगतान से संबंधित नियम सरकार द्वारा निर्धारित किए जाते हैं।

आर्थिक आघात (इकोनॉमिक शॉक)

अचानक घटित होने वाली अप्रत्याशित घटनाएँ जो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था, जैसे— लोग किस प्रकार आय अर्जित करते हैं, व्यय करते हैं और बचत करते हैं, में बड़े परिवर्तन ला देती हैं। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक आपदाएँ (भूकंप, बाढ़ आदि), युद्ध, महामारी, सरकारी नीतियों में अकस्मात परिवर्तन, वस्तुओं की कीमतों में तीव्र उतार-चढ़ाव आदि किसी अर्थव्यवस्था को आर्थिक आघात (इकोनॉमिक शॉक) पहुँचा सकते हैं।

आइए विचार करें

कंपनियाँ शेयर क्यों निर्गत करती हैं और लोग उनका क्रय क्यों करते हैं? क्या शेयर रखने के कुछ लाभ हैं?

© NCERT not to be republished

ओ.टी.पी.

एक बार प्रयोग होने वाला कूट। यह अक्षरों या अंकों से बना एक विशिष्ट और अस्थायी कूट (कोड) होता है, जिसका उपयोग पहचान का सत्यापन करने या किसी लेन-देन को अधिकृत करने के लिए किया जाता है।

वित्तीय धोखाधड़ी और उनसे बचाव

डिजिटल भुगतानों ने जीवन को सरल बना दिया है, किंतु उपयोगकर्ताओं को धोखाधड़ी और ठगी से सतर्क रहना आवश्यक है। धोखेबाज छद्म कॉल या संदेशों के माध्यम से लोगों को हानिकारक ऐप डाउनलोड करने के लिए उकसाते हैं या उन्हें अपना बैंक-विवरण अथवा एक बार प्रयोग होने वाला कूट (ओ.टी.पी.) साझा करने के लिए भ्रमित करते हैं। इससे उन्हें उपयोगकर्ता के मोबाइल फोन या कंप्यूटर तक पहुँच मिल जाती है, जिसके माध्यम से वे उपकरण में संगृहीत व्यक्तिगत सूचनाएँ चुरा सकते हैं और खाताधारकों के बैंक-खातों से धन निकाल सकते हैं।

सचेत रहें

कभी भी अपनी व्यक्तिगत सूचना जैसे— मोबाइल नंबर, खाता संख्या, घर का पता, पासवर्ड या ओ.टी.पी.— अपरिचितों के साथ साझा न करें।

संदेशों के माध्यम से प्राप्त अज्ञात लिंक या वीडियो पर क्लिक करने से बचें।

खाता-पासवर्ड, डेबिट कार्ड पिन आदि जैसी संवेदनशील बैंकिंग सूचना को अपने उपकरणों में संगृहीत न करें।

चित्र 8.23 — डिजिटल भुगतान करते समय सुरक्षित रहने के उपाय

धोखाधड़ी की स्थिति में हेल्पलाइन नं. **1930** पर कॉल करके रिपोर्ट करें या **राष्ट्रीय साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल** पर रिपोर्ट करके सूचना दें।

आगे बढ़ने से पहले...

→ वित्तीय अवसंरचना में वित्तीय संस्थान, जैसे— बैंक, भुगतान-प्रणालियाँ, शेयर बाजार आदि सम्मिलित होते हैं। ये व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकार के मध्य, धन के प्रवाह को वित्तीय लेन-देन के माध्यम से सुगम बनाते हैं।

→ इसके साथ ही, वित्तीय अवसंरचना बचत, ऋण और निवेश को प्रोत्साहित करती है जिससे आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है और अंततः देश की समृद्धि में योगदान प्राप्त होता है।

© NCERT not to be republished

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. वित्तीय अवसंरचना क्या है? यह किस प्रकार भौतिक अवसंरचना की पूरक है?
2. बैंक-खाता व्यक्तियों की किस प्रकार सहायता करता है? क्या सभी के लिए बैंक-खाता होना अनिवार्य होना चाहिए?
3. बचतकर्ताओं और ऋणधारकों के लिए चक्रवृद्धि ब्याज के संभावित लाभ और हानियाँ क्या हो सकती हैं?
4. परिवारों और व्यवसायों के मध्य वित्तीय अवसंरचना धन के प्रवाह को किस प्रकार सक्षम बनाती है? क्या आप सोच सकते हैं कि सरकार इस प्रवाह को कैसे सुगम बना सकती है?
5. बचत खाते की तुलना में सावधि जमा पर अधिक ब्याज दर प्राप्त होने का क्या कारण हो सकता है?
6. साहिल को पोस्टर-निर्माण प्रतियोगिता में ₹10,000 का पुरस्कार प्राप्त हुआ। साहिल के पिताजी उसे वचन देते हैं कि यदि वह इस राशि को व्यय नहीं करेगा, तब वे साहिल को उस पर प्रतिवर्ष 12 प्रतिशत ब्याज देंगे। बताइए तीन वर्ष के बाद साहिल के पास कुल कितनी राशि होगी?
7. शेयर बाजार व्यक्तियों की बचत को संगठित करने में किस प्रकार सहायता करता है? कंपनियाँ लोगों को शेयर निर्गत कर के किस प्रकार से लाभान्वित होती हैं?
8. डिजिटल भुगतानों की सुविधा और साइबर धोखाधड़ी के संकट के मध्य संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है?
9. अपने परिवार के सदस्यों या पड़ोसियों से निम्नलिखित विषयों पर जानकारी प्राप्त कीजिए—
   - वे धन की बचत किस प्रकार करते हैं?
   - क्या वे यू.पी.आई., ए.टी.एम. या चेक का उपयोग करते हैं? यू.पी.आई. के माध्यम से वे किस प्रकार के लेन-देन करते हैं? क्या उन्हें नकद की तुलना में यू.पी.आई. अधिक सुविधाजनक लगता है? यदि हाँ तो क्यों?
   - क्या कभी उनके साथ या उनके किसी परिचित के साथ डिजिटल धोखाधड़ी हुई है, जैसे— बैंक-विवरण माँगने वाली फर्जी कॉल या संदेश के माध्यम से? जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह एक धोखा है, तो उन्होंने क्या कदम उठाए और उस अनुभव से उन्होंने क्या सीखा?

   अपने निष्कर्षों को सारणी अथवा संक्षिप्त रिपोर्ट/प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत कीजिए। अपनी कक्षा में एक रोचक प्रसंग प्रस्तुत कीजिए।

© NCERT not to be republished

10. ‘वित्तीय सुरक्षा पोस्टर’ बनाइए।

→ डिजिटल बैंकिंग सुरक्षा से संबंधित क्या करें और क्या न करें (जैसे— ओ.टी.पी. साझा न करना, धोखाधड़ी की रिपोर्ट करना) को दर्शाते हुए एक पोस्टर का डिजाइन बनाइए।

→ आपातकालीन नंबर एवं वेबसाइट, जैसे *https://cybercrime.gov.in* तथा हेल्पलाइन नं. 1930 को अवश्य सम्मिलित कीजिए।

→ इन पोस्टरों को विद्यालय के गलियारों या पुस्तकालय में लगाइए।

11. चेक का उपयोग प्रायः उपयोगिता बिलों के भुगतान हेतु किया जाता है। अपने माता-पिता से अनुरोध कीजिए कि कुछ मासिक भुगतानों के लिए वे आपको चेक भरने की अनुमति दें।

12. मान लीजिए आपको अपने बैंक खाते से ₹10,000 निकालने हैं। आप अपने बैंक में नकद निकासी पर्ची किस प्रकार भरेंगे? आइए, नीचे इसका अभ्यास करें—

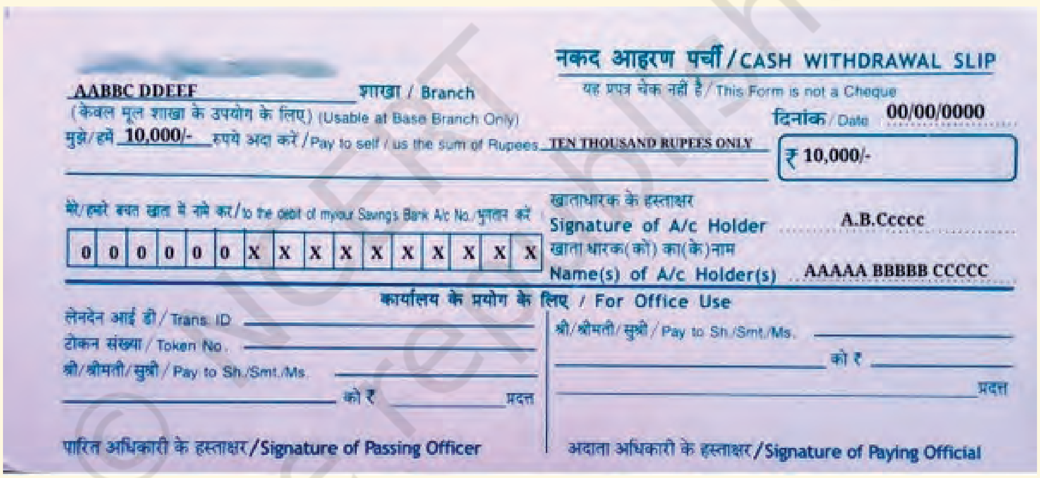
नकद आहरण पर्ची / CASH WITHDRAWAL SLIP
यह प्रपत्र चेक नहीं है / This Form is not a Cheque
AABBC DDEEF शाखा / Branch
(केवल मूल शाखा के उपयोग के लिए) (Usable at Base Branch Only)
दिनांक / Date 00/00/0000
मुझे/हमें 10,000/- रुपये अदा करें / Pay to self / us the sum of Rupees TEN THOUSAND RUPEES ONLY
₹ 10,000/-
मेरे/हमारे बचत खाता में नामे कर/to the debit of my/our Savings Bank A/c No./भुगतान करें
0 0 0 0 0 0 X X X X X X X X X X
खाताधारक के हस्ताक्षर
Signature of A/c Holder A.B.Ccccc
खाता धारक(कों) का(के) नाम
Name(s) of A/c Holder(s) AAAAA BBBBB CCCCC
कार्यालय के प्रयोग के लिए / For Office Use
लेनदेन आई डी / Trans. ID
टोकन संख्या / Token No.
श्री/श्रीमती/सुश्री / Pay to Sh./Smt./Ms.
को ₹
प्रदत्त
पारित अधिकारी के हस्ताक्षर/Signature of Passing Officer
अदाता अधिकारी के हस्ताक्षर/Signature of Paying Official

चित्र 8.24 — नकद निकासी पर्ची

© NCERT not to be republished